''ख़ुदा तुम लोगों की ज़िन्दगी आसान करना चाहता है।''
(सूर–ए–निसा)

इस्लाम में शादी के ऊँचे मक़सद

हुज्जतुल इस्लाम प्रो0 हुसैन अन्सारियान
अनुवादक : मु0 र0 आबिद

(पिछले शुमारे से आगे)

क़ाबलियत/क्षमता का निखार

जब लड़का–लड़की फ़ितरत (प्रकृति) और तबियत (मनोवृत्ति) की बुनियाद पर, ख़ुदा के कहने पर चलते हुए और नबियों के तरीक़े को अपनाते हुए शादी करते हैं तो ख़ुदाई अज़ाब से, अन्दरूनी उथल–पुथल से, शैतानी जाल से और ख़ुदा की लानत धिक्कार से छुटकारा पा जाते हैं। शादी के नतीजे में उन्हें मन का चैन और इत्मिनान मिल जाता है, कुँवारेपन से पैदा होने वाली कठिनाइयों पर कन्ट्रोल पा लेते हैं और अकेलेपन की ज़िन्दगी से छुटकारा मिल जाता है। इस तरह वे ख़ुदाई (दैव्य) पाक माहौल में पहुँच जाते हैं, सही सोचते हैं। सेक्स का भूत उन पर से उतर जाता है। बेशक शादी से अन्दर छिपे गुण, सलाहियत और क़ाबलियत समाने आ जाती है और ज़िन्दगी के पौधे में बेहतरीन फल आ जाते हैं।

बहुत से ज्ञानी विज्ञानी और इस्लामी आलिमों के बारे में इतिहास में मिलता है कि उन्होंने शादी के बाद सौ साल के रास्ते को एक बार में तय किया। शादी से जो उन्हें चैन व इत्मिनान मिला उससे वे ज्ञान की ऊँचाईयों पर पहुँचे। वह ज्ञान तक़्वा, पाकी, बड़ाई, इबादत और जनसेवा में मशहूर हुए।

आयतुल्लाह बुरुजर्दी की जीवनी में (पेज–95) में हैः– 1314 हि0 (1934–35 ई0) में उनकी उम्र 22 साल की हुई तो उनके पिता ने उन्हें ख़त लिखकर बुरुजर्द बुलाया। उन्होंने सोचा कि वे उन्हें शियों के सबसे बड़े धर्म निकेतन हौज़–ए–इल्मिया, नजफ़ अशरफ़ भेजना चाहते हैं, पर बुरुजर्द पहुँचने पर मालूम पड़ा कि उनकी इस सोच के ख़िलाफ उनकी शादी की तैयारियाँ हो रही हैं। इससे उन्हें बहुत दुख होता है। पिता ने उन्हें दुखी देख उसकी वजह जानना चाही तो कहा कि मैं इत्मिनान और लगन से पढ़ रहा था लेकिन अब लगता है कि शादी मेरे और मेरे मक़सद के बीच आड़े आ जाएगी और मक़सद तक पहुँचने न देगी।

उनके वालिद ने कहाः बेटा! यह जान लो कि अगर तुम बाप की मर्ज़ी पर चलोगे तो ख़ुदा की तौफ़ीक़ (अनुकूलन) से बहुत तरक़्क़ी करोगे और यह भी सोचो कि अगर बाप की ये चाहत पूरी न करोगे तो तुम पढ़ाई–लिखाई की अपनी इन कोशिशों के होते हुए भी किसी जगह पहुँच न सकोगे। बाप की बातों ने असर किया और वे हर तरह की शक और ढुलमुलपन से छुटकारा पा गये। शादी के बाद कुछ दिन बुरुजर्द में टिक कर दोबारा इस्फेहान आ गये और पाँच

साल तक पढ़ाई का सिलसिला चालू रखा। दूसरी कलाएँ सीखने में भी मेहनत की। उनकी वफादार बराबर वाली बीवी ने उन्हें इस्फेहान में आराम और चैन दिये और एक मेहरबान दोस्त, चाहने वाली साथी, बेहतरीन सेवा भाव वाली (पतिवृत्ता) की तरह अपने पति की तरक़्क़ियों की ज़मीन बराबर की। इस तरह इस्फहान में जो पाँच साल बिताये उनमें वे बड़े मन से और सुख–चैन से पढ़ाई–लिखाई में जुटे रहे कि कभी–कभी रात–रात भर पढ़ाई में लगे रहते थे। जब कोई और काम न होता ता कुर्आन याद (हिफ़्ज़) करते। यूँ इस्फेहान रहते पूरा सूरा 'बराअत' याद कर लिया जो ज़िन्दगी भर न भूले और बराबर उसकी तिलावत (पाठ) करते रहे।

तफ़सीर 'अल–मीज़ान' नाम से तफ़सीर (कुर्आन–व्याख्या) लिखने वाले तबातबाई मरहूम अपनी कुछ ज्ञान से जुड़ी (इल्मी) और आध्यात्मिक (रूहानी) तरक़्क़ियों और कमालों को अपनी बीवी की देन बताते हैं।

बेशक शादी से सुख–चैन मिलता है और इससे क़ाबिलियत, सलाहियत, वैभव के अखुँवे फूटते हैं। **(जारी)**

बक़िया ....हज़रत इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम

अपना सर ढाँकने के लिए बीबियों के पास चादरें तक नहीं रही गयीं थीं उनमें की बहुतसे ख़वातीन के पास सिर्फ एक चादर थी जिसे वह नमाज़ के वक़्त ओढ़ लिया करती थीं। इसी तरह का दबाव औलादे अली (अ0) के उन लोगों पर भी डाला जा रहा था जो मिस्र में मुक़ीम थे। दसवें इमाम को बड़े सब्र व बर्दाश्त के साथ उस वक़्त तक अब्बासी ख़लीफा की अज़िय्यत और क़हर बर्दाश्त करना पड़ा जब तक कि ख़लीफा का इन्तेक़ाल नहीं हो गया और जिसके बाद मुन्तसिर, मुस्तईन और आख़िर में मुअ्तिज़ ख़लीफा नहीं हो गए और जिनके इशारे से इमाम (अ0) को ज़हर देकर शहीद नहीं कर दिया गया।

□□□

बक़िया ......हज़रत अबुतालिब अ0 की वफ़ात

अगर मौत का फरिश्ता मुझको मोहलत देता तो मैं और कुछ हादसों का मुक़ाबला करता। और उनकी हिमायत करता। याद रखो कि जब तक तुम मुहम्मद (स0) की पैरवी करते रहोगे ख़ैरियत से रहोगे इसलिए इताअत करते रहो ताकि हिदायत पाओ।

बेअ्सत के दसवें साल जनाबे अबुतालिब (अ0) का मक्का में इन्तेक़ाल हुआ। अमीरुलमोमिनीन (अ0) तशरीफ लाए बारगाहे नबुव्वत में ख़बर की, इरशाद हुआ जाओ उनके गुस्ल व कफन का इन्तिज़ाम करो खुदा उनकी मग़फिरत करे और रहमत के ठिकाने में जगह दे।

इब्ने अब्बास नक़ल करते हैं कि जनाबे अबुतालिब का जनाज़ा देखकर सरवरे काएनात (स0) ने फरमाया चचा आपने ख़ूब हक़ अदा किया, ख़ुदावन्दे आलम इसका अज्रे कामिल अता करे।

हज़रत (अ0) के ग़म व अफसोस का अन्दाज़ा इस से हो सकता है कि आप (स0) ने इस साल का नाम ''आमुलहुज़्न'' रखा। यानी ग़म व अफसोस का साल। □□□